स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

एलिज़ाबेथ फ्लाइशमैन-एश्चीम (1859-1905)

बनना तो चाहती थीं अकाउंटेंट मगर बन गई एक्सरे विशेषज्ञ। अच्छी खासी नौकरी थी हिसाब-किताब रखने की। अपनी मां की मृत्यु के बाद एलिज़ाबेथ अपनी बहन और जीजा के साथ रहने लगीं। जीजा डॉक्टर वुल्फ काफी मशहूर डॉक्टर थे। और सबसे प्रमुख बात यह थी कि वे अपने कामकाज में एक्सरे का उपयोग किया करते थे। एक्सरे की खोज 1895 में ही हुई थी। ऐसा बताते हैं कि उस समय दुनिया में मात्र 17 एक्सरे उपकरण थे और डॉक्टर वुल्फ के पास जो उपकरण था वह शायद एकमात्र निजी उपकरण रहा होगा।

एलिज़ाबेथ डॉक्टर वुल्फ के एक्सरे सम्बंधी काम से इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने अपना अकाउंटेंट का पेशा छोड़ा और जाकर विद्युत विज्ञान में 6 माह का कोर्स कर डाला और फिर एक्सरे के काम में जुट गईं। 1897 में वह दौर शुरू हुआ जब डॉक्टर वुल्फ और एलिज़ाबेथ ने मिलकर एक्सरे के उपयोग पर प्रयोग शुरू किए। इन प्रयोगों की सबसे उल्लेखनीय बात यह थी कि ये खुद पर ही किए जाते थे।

इसी दौरान 1898 में स्पैनी-अमरीकी युद्ध शुरू हुआ। इस युद्ध के दौरान डॉक्टर वुल्फ और एलिज़ाबेथ ने अपनी एक्सरे मशीन से कई घायल सैनिकों के शरीरों में गोली का पता लगाया और उनकी टूटी हड्डियों की जांच करके फ्रेक्चर का सही निदान किया। उनके द्वारा ली गई एक्सरे तस्वीरें बहुत उपयोगी सिद्ध हुईं और एक्सरे का चिकित्सा में उपयोग प्रमाणित हुआ।

युद्ध के बाद भी एक्सरे का उपयोग जारी रहा। लोगों को यकीन दिलाने के लिए कि एक्सरे की मदद से तस्वीर खींचना हानिरहित है, एलिज़ाबेथ उन्हें पहले अपनी तस्वीर खींचकर दिखाया करती थीं। परिणाम यह हुआ कि उनके दोनों हाथों पर छाले पड़ गए जो कालांतर में कैंसर में तबदील हो गए। कैंसर काफी फैल गया और अंततः एलिज़ाबेथ को अपने प्रयोगों की कीमत अपनी जान से चुकानी पड़ी।

विडंबना देखिए कि उनकी जिस हिम्मत और निष्ठा ने कई मरीज़ों को यकीन दिलाया कि एक्सरे हानिरहित है, उसी ने यह भी प्रमाणित किया कि एक्सरे के ज़्यादा उपयोग के असर घातक और शायद जानलेवा तक हो सकते हैं।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी